Year-8; Sept. 2017
ISSN–2231-1130
UGC Sr. No. – 48398
VEETHIKA

हड़प्पा एवं मोहन जोदड़ो की नगर योजना एवं वास्तुकला

डॉ0 स्वाती निगम*

वास्तुकला किसी स्थान को मानव के लिए वास योग्य बनाने की कला है। अतः कालान्तर में ये चाहे जितनी जटिल हो गयी हो, इसका आरम्भ मौसम की उग्रता, वन्यपशुओं के भय और शत्रुओं के आक्रमण से बचने के प्रारम्भिक उपायों में ही हुआ होगा। मानव सभ्यता के इतिहास का कुछ ऐसा ही आरम्भ हैं, इसीलिए विद्वानों ने इसे मानव सभ्यता का ''योजक मसाला'' कहा है।

सिन्धु सभ्यता विश्व की प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओं में से एक प्रमुख सभ्यता है। ये 'हड़प्पा सभ्यता' और 'सिन्धु–सरस्वती सभ्यता' के नाम से भी जानी जाती है। इसका विकास सिन्धु और घघ्घर/हकड़ा (प्राचीन सरस्वती) के किनारे हुआ। मोहन जोदड़ो, हड़प्पा, कालीबंगा, लोथल, धोलावीरा और राखीगढ़ी इसके प्रमुख केन्द्र थे। ब्रिटिश काल में हुई खुदाईयों के आधार पर पुरातत्ववेत्ता और इतिहासकारों का अनुमान हैं कि यह अत्यन्त विकसित सभ्यता थी और ये शहर अनेक बार बसें और उजड़े हैं।

वास्तु एवं स्थापत्य के क्षेत्र में यहाँ के लोगों की ये महत्वपूर्ण देन थी। हड़प्पा और मोहन जोदड़ो दोनों स्थल उत्तम नगर विन्यास के उदाहरण है। यहाँ की खुदाई में मिली मूर्तियों, सिक्कों तथा भवनों के अवशेषों से ज्ञात होता हैं कि हड़प्पा संस्कृति के लोग नगर निर्माण कला, वास्तुकला, मूर्तिकला, मुद्राकला एवं शिल्पकला से सुपरिचित थे।[1] शिल्पकला से सम्बन्धित जो भग्नावशेष प्राप्त हुए हैं उनसे प्रतीत होता हैं कि शिल्पकला का प्रयोग कला के रूप में कम व्यवसायों के रूप में अधिक होता था।[2] यहाँ के लोगों का सौन्दर्यबोध उनकी शिल्प कला में सर्वाधिक स्पष्टरूप से मुखरित हुआ हैं, सैंधव लोग सभ्य, उच्च कोटि के अभियन्ता एवं वास्तुशिल्पज्ञ थे। प्रमुख नगरों का निर्माण उन्होनें नियोजित योजना के आधार पर किया था। सैंधव जनों ने अपने नगरों के निर्माण में शतरंज पद्धति (चेशबोर्ड) को अपनाया जिसमें सड़के सीधी एवं नगर सामान्य रूप से चौकोर होते थे। सड़के बिछाने की समस्या मकानों के निर्माण से पहले ही हल कर दी जाती थी। मुख्य मार्ग उत्तर से दक्षिण जाता था एवं दूसरा मार्ग पूरब से पश्चिम उसे समकोण पर काटता था।

वास्तुविद्या–आचार्यों ने दुर्ग के रूप में उनका विधान किया। उनके पुरविन्यास में परिखा, प्राकार, वप्र, द्वार, अट्टालक, महापथ, प्रासाद, कोष्ठागार, सभा, चत्वर, वीथी, जलाशय आदि वास्तु के अनेक अंग प्राप्त हुए है।

हड़प्पा के टीले इमारतों से प्रायः शून्य ही पाये गये है। इनके विपरीत मोहन्जोदड़ो खण्डहर में अनेक सुरक्षित एवं दर्शनीय इमारतें प्रकाश में आयी है इसके फलस्वरूप यहाँ दो–तीन मंजिल वाले पक्के मकानों की पंक्तियाँ क्षतिग्रस्त अवस्था में भी आश्चर्य चकित करती है। अन्य सांस्कृतिक विलक्षणताओं के समान हड़प्पा और मोहन्जोदड़ो की वास्तुकला भी एक समान थी।[3]

सर्वप्रथम कनिघंम ने सन् 1878 ई0 में हड़प्पा के टीले को पता लगाया था और वहाँ से प्राप्त कुछ मुद्राएं भी प्रकाशित की थी।[4] 1921 ई0 में दयाराम साहनी ने हड़प्पा और 1922 ई0 में राखलदास बनर्जी ने सिन्ध के लरकाना जिले के मोहन जोदड़ो नामक स्थान में जो उत्खनन कार्य कराया उसमें प्राप्त दो नगरीय– सभ्यताओं के अवशेषों से ताम्रयुगीन सभ्यता स्पष्ट परिलक्षित हुयी है। तदुपरान्त् सर जॉन मार्शल और एम0एस0 वत्स ने हड़प्पा में अनेक वर्षों तक उत्खनन कार्य जारी रखा और प्राप्त अवशेषों से विश्व की सबसे विस्तृत एवं शक्तिशाली सभ्यता पूर्ण रूप से प्रकाश में आयी। उत्खनन में दुर्ग, प्राकार, खाई, स्नानागार, सड़कों, भवनों, चबूतरों, कोष्ठागार, सभाभवन, नालियों आदि के अवशेष मिले है।

दुर्ग–रचना – नगर की रक्षा के लिए दोनों ही नगरों में वहाँ के निवासियों ने दुर्गों की रचना

*प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

की। हड़प्पा और मोहन्जोदड़ो के दुर्ग नगर की पश्चिम दिशा में बने थे। दुर्ग की रक्षा के लिए परिखा, प्राकार, बुर्ज आदि बने हुये थे। हड़प्पा के समीप रावी नदी का तट और मोहन्जोदड़ो के समीप सिन्धु नदी का तट था। हड़प्पा के दुर्ग का आकार समानान्तर चतुर्भुज सदृश है। इसकी लम्बाई लगभग 450 गज, चौड़ाई लगभग 250 गज एवं ऊँचाई लगभग 14–15 गज है। इसका घेरा 3 मील लगभग है। इस दुर्ग की रक्षा के लिए एक प्राचीर (प्राकार) का निर्माण किया गया था। प्राचीर नीचे की ओर 45 फीट तथा ऊपर की ओर उसकी चौड़ाई कम होती चली गयी है। इसके बीच–बीच मे बुर्ज (अट्टालक) बने हुये थे, जिनमें सम्भवतः रक्षा के लिए सैनिकों का वास रहा होगा। मुख्य दिशाओं मे ऊँचे गोपुर या द्वार थे। सम्भवतः चारो–ओर परिखा(खाई) भी थी जो नदी जल से भरी रहती थी और उसमें शत्रुओं को प्रवेश न मिल सके, इसलिये उसमें घातक प्राणियों को भी सम्भवतः रखा जाता होगा। हड़प्पा–दुर्ग का यह रूप "कौटिल्य के अर्थशास्त्र" के वर्णन से मिलता है एवं जिस प्रकार यहाँ नियमबद्ध पुर–विन्यास तथा उसकी विशालता थी, वह भी ऋग्वेद मे वर्णित 'पुर' से सामंजस्य रखती है।

मोहन्जोदड़ो में भी हड़प्पा की ही भाँति एक दुर्ग के अवशेष मिले है जो एक ऊँचे टीले पर स्थित था। यह टीला दक्षिण की ओर 20 फीट व उत्तर की ओर 40 फीट ऊँचा है। सिन्धु नदी की बाढ़ के पानी ने इसके बीच के कुछ भाग को काटकर एक प्रकार से इसे दो भागों में बाँट दिया है।[5]

विशाल स्नानागार – मोहन्जोदड़ो के भग्नावशेषों में प्राप्त स्नानागार सबसे अधिक महत्वपूर्ण है यह 180 फीट लम्बा व 108 फीट चौड़ा है। स्नानागार के चारों–ओर कक्ष एवं खुले हुये बरामदें बने हुये थे। इस स्नानागार की पश्चिमी दिशा को छोड़कर शेष तीनों दिशाओं की ओर कक्ष बने हुये थे। उत्तर की ओर के कक्ष पूर्व व दक्षिण की ओर के कक्षों से बड़े थे। सभी कमरों की दीवारें बहुत मजबूत और उन पर भीतर और बाहर दोनों ओर से मोटा प्लास्टर (अलकतरे के मसाले का) किया हुआ था।[6] कमरों मे नल भी लगे हुये थे जिससे पानी कमरों में ही प्राप्त हो जाता होगा। यह भी उल्लेखनीय है कि आधुनिक काल के ही समान जल वितरण प्रणाली उस काल मे प्रचलित थी। स्नानागार का फर्श भी पक्की ईटों द्वारा बनाया गया था और इसकी जुड़ाई एवं फर्श के आस–पास की दीवारों की चुनाई भी जिप्सम द्वारा की गयी थी।[7]

इन विशाल स्नानागारों के मध्य में 39 फीट लम्बा और 23 फीट चौड़ा व 8 फीट गहरा एक पक्का जलकुंड था। जलकुंड के नीचे उतरने के लिए सीढ़ियों की व्यवस्था थी एवं उसके गंदे पानी को निकालने के लिए एक गहरी और चौड़ी नाली एक ओर बनी हुयी थी और उसके दूसरी ओर इसी प्रकार की एक अन्य नाली थी जो इस जलकुंड के समीपवर्ती कुएं से जुडी हुयी थी।

भवन :– मुख्य राजपथ के अतिरिक्त दोनों नगरों मे चतुष्पथ अन्य चौड़े मार्ग व गालियाँ थी। इन्ही मार्गों व गालियों के किनारें दोनों नगरों का भवन विन्यास हुआ था जो अब कालातीत मे अवशेष मात्र ही रह गये हैं। किन्तु इन अवशेषों से ज्ञात होता है कि सैंधव सभ्यता के लोग श्रेष्ठ प्रकार की भवन निर्माण योजना से पूर्ण परिचित थे।

ये भवन तत्कालीन निर्माण कला मे स्थायीपन, उपयोगिता, सुन्दरता, सादगी, भव्यता एवं विशालता, स्वच्छता एवं आकर्षण आदि का ध्यान रखकर बनायें जातें थे। सुनियोजित आधार पर बने मकानों में प्रकाश,वायु और जल व्यवस्था का पूरा प्रबन्ध था। यहाँ के भवनों मे राजप्रासाद, विशाल भवन सम्मिलित थे और उनमें सोपान भी बने थें। यहाँ के भवनों मे एक विशेषता यह थी कि लगभग प्रत्येक गृह के मुख्यद्वार मुख्यमार्ग की ओर न होकर विपरीत दिशा मे गालियों की ओर खुलते थे। प्रत्येक प्रवेश द्वार के सम्मुख एक दीवार खडी की गयी थी, ताकि घर के अन्दर होने वाले क्रिया–कलापों की गोपनीयता बनी रहे। घर प्रायः एक सीध मे बने होते थे एवं उनमे प्रकाश व वायु के प्रबन्ध के लिये झरोखे अथवा खिड़कियां रहती थी जो पत्थर की जालियों के रूप में हुआ करती थी। पत्थर के खम्भों अथवा ईटों के खम्भों का प्रयोग बहुत ही कम था।

मकानों को सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु उनकी नींवों को पक्की एवं गहरी बनाया जाता था। उन

नींवों पर ही सीधी दीवारें खड़ी की जाती थी। हड़प्पा में कुछ चबूतरें भी प्राप्त हुये है। ये चबूतरें आकार में गोल और उनके बाहरी किनारे तथा फर्श पक्की ईटों द्वारा निर्मित है। इन सभी चबूतरों के मध्य मे एक गोल छेंद है जो सम्भवतः ओखली का कार्य करता रहा होगा।[8]

प्रायः हर अच्छे घर में मीठे पानी का एक कुआँ होता था जो ईटों की चुनाई से जोड़ा जाता था। कुएं के मुँह पर कुछ ऊँची मुंडेर बनी होती थी।[9]

मकानों के बाहर और सड़कों के किनारे पक्की ईटो की नालियाँ बनी हुयी थी। घरों की नालियाँ सड़क की नालियों से मिली हुयी थीं। नालियाँ प्रायः ढकी रहती थी और इन नालियों के बीच में लकड़ी के ढक्कन से ढके हुये उथले गड्डे कूड़ा इकट्ठा करने के लिये रखे जाते थे। ये नालियाँ डेढ़ फीट तक चौड़ी आवश्यकतानुसार बना ली जाती थी।

हड़प्पा की अपेक्षा मोहन जोदड़ो मे अधिक श्रेष्ठ और विशाल भवनों के अवशेष प्राप्त हुये है। हड़प्पा में दुर्ग या कोटला के उत्तर में जो भग्नावशेष मिले हैं, वे घरों, चबूतरों एवं अन्नागारों के हैं। यह टीला लगभग 20 फीट ऊँचा है। इसी पर दक्षिण की ओर कोटला के समीप दो भिन्न–भिन्न पंक्तियों मे कुछ छोटे–छोटे ग्रह कभी रहे होंगे। उनमें से ऊपरी पंक्ति में सात व दक्षिणी पंक्ति मे आठ ग्रहों के अवशेष प्राप्त हुये हैं। ये ग्रह निम्न वर्गीय अथवा श्रमिक लोगों के लिए बनाये गये होंगे। इन ग्रहों में से प्रत्येक की लम्बाई चौड़ाई कुल मिलाकर 56 ग 24 फीट है। प्रत्येक घर में दो कमरे होते थे, अथवा एक कमरा और आंगन होता था।[10] हड़प्पा के इन ग्रहों में मोहन्जोदड़ो के मकानों की भाँति कुएं नहीं मिले है, बल्कि खुदाई में कुछ बड़े कुओं के अवशेष प्राप्त हुये है। इससे प्रतीत होता है ये सार्वजनिक कुएं थे जिनका उपयोग वहाँ के लोग पीने के पानी को प्राप्त करने के लिए करते रहे होंगे।

छत प्रायः समतल बनायी जाती थीं। दुर्भाग्य से किसी भी छत के अवशेष प्राप्त नहीं हुये है।

मकानों में द्वार सामान्यतया सवा तीन या साढ़े तीन फीट चौड़े एवं इससे दुगनी लम्बाई के बनाये जाते थें। परन्तु घर के कमरों के आधार पर द्वारों की लम्बाई–चौड़ाई कम–अधिक हो जाती थी

घरों के मध्य मे प्रायः रसोई घर बने रहते थे। चूल्हे ईटों तथा मिटटी द्वारा बनाये जाते थे। प्रत्येक घर मे प्रायः स्नानागार की व्यवस्था रहती थी जिनके फर्श ईटों द्वारा पक्के बने रहते थे। पानी एकत्र करने के लिए आधुनिक प्रकार की हौदी की भाँति गोलाकार या चौकोर बड़े बर्तन का प्रयोग किया जाता था।

अन्नागार :– मोहन्जोदड़ो और हड़प्पा दोनों ही स्थानों मे विशाल अन्नागारों के अवशेष प्राप्त हुये है। हड़प्पा में अन्नागारों की दो पंक्त्यिां मिली है प्रत्येक पंक्ति में छः अन्नागारों के अवशेष हैं जिनकी लम्बाई एवं चौडाई 50X20 फीट है। इन दोनों पंक्तियों के बीच 23 फीट चौड़ा रास्ता है। अन्नागारों का निर्माण 4 फीट ऊँचे चबूतरों पर किया गया है। ताकि नीचे तली की ओर से अन्न मे सीलन आदि का भय न रहे। इन सभी के द्वार उत्तर की ओर नदी की तरफ थे जिससे की जलमार्ग द्वारा अन्न आवश्यकता पडने पर अन्य स्थानों को भेजा जा सके।[11]

"मोहन जोदड़ो में भी स्नानागार के पश्चिम में एक विशाल भवन (अन्नागार) के अवशेष मिले हैं। यह 150 फीट लम्बा तथा 75 फीट चौड़ा है इस अन्नागार में अनेक प्रकोष्ठ प्राप्त हुये है। प्रत्येक कमरे में प्रकाश का पूरा प्रबन्ध किया गया था इसके उत्तर में एक चबूतरा है जहां सम्भवतः आवश्यकता पड़ने अन्न को रखने या निकालने की व्यवस्था थी।"[12]

उपरोक्त वर्णन के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इन स्थानों में कुछ न कुछ स्वयं की विशिष्टतायें अवश्य थीं और सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि सैंधव सभ्यता का क्षेत्र बहुत विस्तृत था और उसमें जो सभ्यता थी, वह हमारे देश के लिए महान गौरव प्रदान करने वाली रही।

संदर्भ –

1. श्रीवास्तव, के0सी0 एवं मो0जुनैद खां, विश्व सभ्यता का इतिहास, लखनऊ, 1990 पृ0 207
2. वही, पृ0, 211–212
3. अग्रवाल, वासुदेव शरण, भारतीय कला, वाराणसी 2007, पृ0, 15
4. वर्मा, महेन्द्र, प्राचीन भारत की वास्तु कला,नई दिल्ली 1996 पृ0 5
5. अग्रवाल, वासुदेव शरण, पूर्वोद्धत, पृ0 20
6. वर्मा, महेन्द्र, पूर्वोद्धत, पृ0 6
7. वही, पृ0 7
8. अग्रवाल, वासुदेव शरण, पूर्वोद्धत, पृ0 20
9. वर्मा, महेन्द्र, पूर्वोद्धत, पृ0 8
10. वही, पृ0 10
11. वही, पृ0 10